ह्विटलसी का वर्गीकरण

सन् 1936 में **डॉ. ह्विटलसी** (D. Whittlesey) ने संसार को विशिष्ट कृषि प्रदेशों में विभाजित किया था। उसने अपने विभाजन में निम्नांकित तत्वों को अपने वर्गीकरण का आधार बनाया था:

(1) कृषि उपज तथा पशुओं की स्थिति,

(2) कृषि के प्रकार,

(3) पूंजी, श्रम और संगठन,

(4) कृषि उपज के उपभोग की विधियाँ,

(5) वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग।

(1) **कृषि उपज तथा पशुओं की स्थिति—ह्विटलसी** ने कृषि के अन्तर्गत फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुओं की स्थिति को भी अपने वर्गीकरण का आधार माना है। उसके मतानुसार दोनों का अन्तर्सम्बन्ध कृषि क्षेत्रों में परिलक्षित होता है। कृषि के लिए दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। किसी स्थान विशेष में पशुपालन और कृषि की उपज उस क्षेत्र के धरातल, भूगर्भिक बनावट तथा जलवायु पर निर्भर करता है। इसी कारण विश्व में अनेक क्षेत्र ऐसे होते हैं जहाँ फसल का उत्पादन महत्वपूर्ण है और अन्य स्थानों पर उनका स्थान गौण होता है। परन्तु कुछ स्थानों पर पशुओं का महत्व अधिक होता है और कृषि उपज का गौण होता है।

(2) **कृषि के प्रकार**—संसार के विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न प्रकार से कृषि की जाती है। कृषि के ये प्रकार शुष्क, आर्द्र, सिंचित आर्द्र हो सकते हैं। कहीं यह कृषि प्राचीन हलों के द्वारा की जाती है तो कहीं मशीनों द्वारा सम्पन्न होती है। जीविकोपार्जन के लिए की जाने वाली कृषि मुख्यतः परम्परा पर आधारित होती है उनमें पशुओं का उपयोग किया जाता है।

(3) **पूंजी, श्रम और संगठन**—विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में पूँजी की उपलब्धता की असमानताओं के कारण भी वर्गीकरण में भिन्नता पायी जाती है। रूस में सहकारी कृषि तथा पश्चिमी देशों में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में कृषि के संगठन, पूंजी विनियोजन और नियोजन में भी अन्तर मिलता है। इस आधार पर भी कृषि क्षेत्रों में अन्तर पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

(4) **कृषि उपज के उपभोग की विधियाँ**—कृषि उपज के उपभोगकेआधार पर भी कृषि क्षेत्रों में भिन्नता मिलती है। कहीं कृषि की उपज अथवा खाद्यान्न केवल स्वावलम्बी उपयोग के लिए पैदा किया जाता है तो कहीं व्यापारिक उपयोग के लिए पैदा किया जाता है। इस आधार पर भी कृषि क्षेत्रों में भिन्नता पायी जाती है।

(5) **वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग**—वैज्ञानिक उपकरण तथा कृषकों का वैज्ञानिक स्तर कृषि में भिन्नता उत्पन्न कर देता है। रासायनिक खादों के उपयोग से कृषि की उपज में वृद्धि की जा सकती है। यान्त्रिक क्रियाओं से भी उपज बढ़ाई जा सकती है। कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से फसल को हानि से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

उपर्युक्त सभी आधारभूत तत्वों को सम्मिलित कर **ह्विटलसी** ने विश्व के कृषि प्रदेशों का निम्नानुसार वर्गीकरण प्रस्तुत किया है—

1. घुमक्कड़ (चलवासी) पशुचारण प्रदेश (Nomadic Herding Region)
2. व्यापारिक पशुपालन प्रदेश (Commercial Livestock Region)
3. स्थानान्तरणशील कृषि प्रदेश (Shifting Cultivation Region)
4. प्रारम्भिक स्थायी कृषि प्रदेश (Rudimental Sedentary Agricultural Region)
5. चावल प्रधान गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश (Intensive Subsistance Rice Producing Regions)
6. चावल विहीन गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश (Intensive Subsistance Non-Rice Producing Region)
7. व्यापारिक बागाती प्रदेश (Commerical Plantation Agricultural Region)
8. भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेश (Mediterranean Agricultural Region)
9. व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि प्रदेश (Commercial Grain Farming)
10. व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश (Commercial Stock Raising and Crop Farming Region)
11. निर्वाहक उपज एवं पशुपालन कृषि प्रदेश (Subsistance Crop and Stock Raising Region)
12. व्यापारिक दुग्ध पशुपालन कृषि क्षेत्र (Commercial Dairy Farming)
13. बागवानी कृषि प्रदेश (Specialized Horticulture or Plantation Region)

1. घुमक्कड़ (चलवासी) पशुचारण प्रदेश (Nomadic Herding Region)

घुमक्कड़ पशुचारण को अत्यन्त ही प्राचीन अर्थव्यवस्था की संज्ञा दी जाती है। इन प्रदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर चराया जाता है। प्राय: यह उन प्रदेशों में अधिक प्रचलित है जहाँ वर्षा बहुत कम होती है, जलवायु विषम पायी जाती है और समस्त आर्थिक जीवन पशुओं पर ही निर्भर रहता है। यहाँ की विषम जलवायु और कम वर्षा के कारण घास कम उगती है और यदि उगती भी है तो कम नमी के कारण शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। अत: अपने पशुओं को चराने के लिए चारे की तलाश में ये चरवाहे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते रहते हैं।

इस प्रकार की कृषि के क्षेत्र अफ्रीका एवं एशिया के शुष्क प्रदेश, घास वाले दक्षिणवर्ती या सीमान्त टुण्ड्रा प्रदेश मुख्य हैं। इन प्रदेशों में मनुष्य अपने पशुओं के साथ भ्रमण करता रहता है अत: इस प्रकार की कृषि को स्थानान्तरण कृषि के नाम से भी पुकारा जाता है। यह स्थानान्तरण दो प्रकार का होता है—(i) स्थानीय स्थानान्तरण, तथा (ii) मौसमी स्थानान्तरण।

(i) **स्थानीय स्थानान्तरण**—इस प्रकार के स्थानान्तरण सीमित और सामयिक होते हैं। ऊँट-घोड़े पालने वाले बद्दू लोग अपने पशुओं के साथ लम्बी दूरी तक चले जाते हैं जबकि भेड़-बकरी पालने वाले बद्दू अरब में केवल मरुस्थलों की सीमा तक ही जाते हैं और घास की समाप्ति पर पुनः अपने गाँवों को लौट आते हैं। टुण्ड्रा के रेण्डियर पालक चरवाहे छोटी शुष्क ऋतु में पश्चिमी स्वीडन तथा उत्तरी नार्वे की ओर चले जाते हैं, शीत ऋतु में यह लोग वापस वन प्रदेशों में आ जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(ii) **मौसमी स्थानान्तरण**—भूमध्यसागरीय प्रदेशों और मध्य एशिया में विशेष प्रकार का पशुचारण पाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में यह पशुपालक ऊँचे ढालों पर और शीत ऋतु में निचली घाटियों में स्थानान्तरित हो जाते हैं।

घुमक्कड़ पशुचारण के क्षेत्र

इस प्रकार के पशुचारण क्षेत्र मध्य एशिया (मंगोलिया, तिब्बत, रूसी तुर्किस्तान और साइबेरिया के घास) टुण्ड्रा के प्रदेश में लैप्स और समोयड्स अरब और सहारा के बद्दू प्रमुख हैं।

2. व्यापारिक पशुपालन प्रदेश (Commercial Livestock Regions)

व्यापारिक पैमाने पर पशुपालन का कार्य सभ्य लोगों द्वारा आधुनिक काल में शीतोष्ण घास के मैदानों में तथा उष्ण कटिबन्धीय सवाना प्रदेशों में किया जाता है। मोटे तौर पर सम्पूर्ण विश्व की 1 प्रतिशत से कुछ ही अधिक जनसंख्या इस उद्यम में लगी है। इस प्रकार के पशुचारण की विशेषता यह है कि यहाँ पशुपालक सामान्यतः एक ही स्थान पर टिककर रहते हैं और चरागाह बड़े-बड़े क्षेत्रों में विस्तृत होते हैं।

व्यापारिक पशुपालकों की विशेषताएँ

(1) शुष्क और अर्द्ध-शुष्क प्रदेशों में अनाज की कृषि की अपेक्षा पशुपालन पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है क्योंकि इन भागों में वर्षा की अनियमितता और अपर्याप्तता के कारण कृषि सम्भव नहीं होती है किन्तु अनेक प्रकार की घासें उग आती हैं जिन पर पशुओं को चराया जा सकता है।

(2) पशुपालन के अन्तर्गत अनेक क्षेत्रों में भिन्नता पायी जाती है। सामान्यतः गाय, भेड़-बकरियाँ तो सर्वत्र पाली जाती हैं किन्तु क्षेत्र विशेष में प्रकृति प्रदत्त एवं मानवीय कारणों से पशुओं में भी भिन्नता पायी जाती है। उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के क्षेत्रों में गाय, बैल व भेड़ अधिक पाले जाते हैं, जबकि दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड में बकरियाँ अधिक पाली जाती हैं।

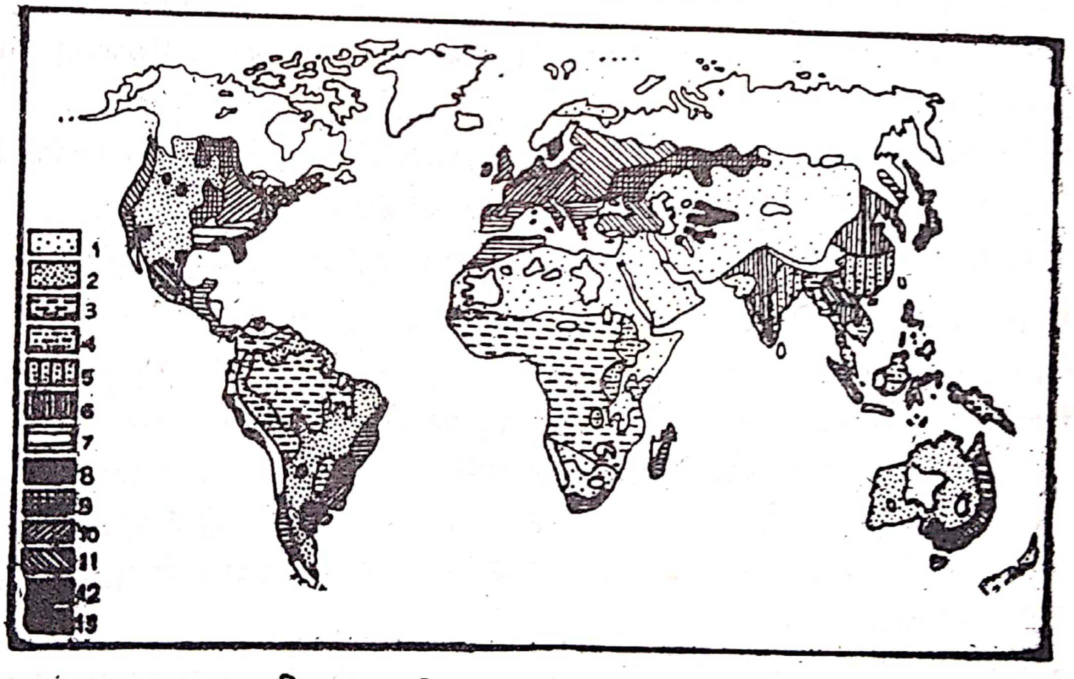

चित्र 7.1—ह्विटलसी के अनुसार कृषि प्रदेश

ह्विटलसी द्वारा कृषि प्रदेशों का वर्गीकरण

1. घुमक्कड़ पशुचारण प्रदेश 2. व्यापारिक पशुपालन प्रदेश 3. स्थानान्तरण कृषि प्रदेश 4. प्रारम्भिक स्थायी कृषि प्रदेश 5. चावल प्रधान गहरी निर्वाहन कृषि प्रदेश 6. चावल विहीन गहरी निर्वाहन कृषि प्रदेश 7. व्यापारिक बागाती कृषि प्रदेश 8. भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेश 9. व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि प्रदेश 10. व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश 11. निर्वाहक उपज एवं पशुपालन कृषि प्रदेश 12. व्यापारिक दुग्ध एवं पशुपालन कृषि प्रदेश 13. बागवानी कृषि प्रदेश।

Scanned with CamScanner

(3) व्यापारिक पशुपालन का मुख्य उद्देश्य पशुओं से ऊन, माँस, चमड़ा, खालें, बाल, खुर आदि प्राप्त करना और उनका निर्यात करना है। सामान्यतः इन क्षेत्रों में निकटवर्ती क्षेत्रों से पशुओं को लाकर पहले उन्हें मक्का, चरी और हाथी घास चराकर तन्दुरुस्त किया जाता है तदुपरान्त निकटवर्ती औद्योगिक नगरों में माँस की पूर्ति के लिए उन्हें भेज दिया जाता है।

(4) पशुओं को विशाल चरागाह पर चराया जाता है। ये चरागाह हजारों एकड़ तक विस्तृत होते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में यह चरागाह 1,000 एकड़ और रूस में 10,000 एकड़ तक के होते हैं, आस्ट्रेलिया में 13,000 वर्ग किलोमीटर तक चरागाह विस्तृत हैं । इन पशुओं की भली-भाँति देखभाल भी की जाती है।

(5) चरागाहों पर ही अथवा उनके निकट ही चरवाहों के मकान, चारा रखने के क्षेत्र, शीत भण्डार व्यवस्था आदि सभी निकट में ही उपलब्ध होते हैं।

व्यापारिक पशुपालन के क्षेत्र

अध्ययन की दृष्टि से व्यापारिक पशुपालन क्षेत्रों को निम्न दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1. शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदानों में पशुपालन,
2. उष्ण कटिबन्धीय घास के मैदानों में पशुपालन।

1. **शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदानों में पशुपालन**—व्यापारिक पैमाने पर पशुपालन सामान्यतः शुष्क और अर्द्ध-शुष्क उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहाँ यूरोपीय लोग जाकर बस गये हैं। यही उन भागों में विकसित हुआ है, जहाँ पश्चिमी सभ्यता से सम्बद्ध लोगों एवं शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों का अभूतपूर्व, मिश्रण पाया जाता है। पश्चिमी-उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमेरिका में पैंटागोनिया, ब्राजील का पठार, दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका के पठारी भाग तथा आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, रूस के पश्चिमी क्षेत्र एवं उत्तरी-पूर्वी यूरोप में यह कार्य, विशेष रूप से किया जाता है।

(i) **पश्चिमी-उत्तरी अमेरिका**—संयुक्त राज्य अमेरिका के मैदानों और पठारी भागों पर, कनाडा और प्रेयरी प्रान्त एवं उत्तरी मैक्सिको में सबसे अधिक चौपाये पाले जाते हैं। पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा में कुल भूमि के 3/4 भाग में चराई की जाती है। इन क्षेत्रों में चौपाये (माँस और दूध के लिए), भेड़ (ऊन और माँस के लिए), अंगोरा बकरियाँ (बालों के लिए) पाली जाती हैं। यहाँ अल्फाफा, ग्रामा घास, हे घास, हाथी घास पर पशुओं का पालन किया जाता है।

(ii) **दक्षिणी अमेरिका में**—विश्व का दूसरा महत्वपूर्ण पशुपालन क्षेत्र दक्षिणी अमेरिका के घास के मैदान हैं। इस क्षेत्र के ब्राजील, अर्जेण्टाइना और यूरुग्वे में पशु पाले जाते हैं। पश्चिमी अर्जेण्टाइना के शुष्क मैदान और पर्वतीय भागों में दक्षिणी पैण्टागोनिया और पेराडल फ्यूगो में पशु पाले जाते हैं। यह क्षेत्र अपने माँस वाले पशुओं के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में चौपाये, भेड़ और घोड़े पाले जाते हैं।

(iii) **आस्ट्रेलिया-न्यूजीलैण्ड**—पशुपालन का तीसरा मुख्य क्षेत्र आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में पाया जाता है। आस्ट्रेलिया में मुख्यतः भेड़ें पाली जाती हैं। यह क्षेत्र दक्षिण-पूरब और पश्चिमी भागों में स्थित हैं। इन भागों में आर्द्र जलवायु के कारण माँस देने वाली भेड़ें अधिक अच्छी तरह पाली जाती हैं।

न्यूजीलैण्ड में चौपाये दूध और माँस तथा भेड़ें ऊन और माँस के लिए पाली जाती हैं। न्यूजीलैण्ड के 1/3 भाग में पौष्टिक घास पैदा की जाती है। उत्तम जलवायु होने के कारण पशु सम्पूर्ण वर्ष हीं खुले चरागाह में चरते रहते हैं।

(iv) **अन्य क्षेत्र**—ग्रेट ब्रिटेन में मूरलैण्ड, हॉलैण्ड और डेनमार्क भी पशुपालन और भेड़ पालन के लिए प्रसिद्ध हैं। दक्षिणी अफ्रीका में वैल्ड घास के मैदानों में चौपाये, अंगोरा बकरियाँ तथा भेड़ें पाली जाती हैं।

2. **उष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान में पशुपालन**—इन प्रदेशों में कम्पाज और लैनाज (दक्षिणी अमेरिका), आस्ट्रेलिया के क्वीन्सलैण्ड में डाउनलैण्ड्स एवं अफ्रीका के सवाना क्षेत्र सम्मिलित किये जाते हैं। इन सभी क्षेत्रों में 50 से 100 सेमी. वर्षा होती है। परन्तु जलवायु गर्म होने के कारण वर्षा का जल शीघ्र ही सूख जाता है। इन मैदानों में भेड़, सूअर, मुर्गियाँ और चौपाये पाले जाते हैं।

Scanned with CamScanner

व्यापारिक पशुपालन की विशेषताएँ

(1) इन सभी क्षेत्रों में पशुपालन महत्वपूर्ण व्यवसाय है। इन पशुपालकों के समक्ष अन्न उत्पादन बहुत कम महत्व रखता है।

(2) यहाँ की संस्कृति पर भी पशुओं का प्रभाव पड़ता है। पशुओं के पालने में क्षेत्रीय विशिष्टता अधिक पायी जाती है।

(3) निर्यात की वस्तुओं में पशु जनित पदार्थों की अधिकता रहती है।

(4) पशुपालन वैज्ञानिक विधियों से किया जाता है।

(5) इन प्रदेशों की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पशुओं पर निर्भर रहती है।

3. स्थानान्तरण कृषि प्रदेश (Shifting Cultivation Region)

उष्ण-आर्द्र कटिबन्धीय क्षेत्रों में निम्न भूमि और पर्वतीय क्षेत्रों में आज भी कृषि का स्वरूप अत्यधिक प्राचीन है। इन प्रदेशों में ऊँचे तापमान एवं घनघोर वर्षा के कारण सघन वन प्रदेश मिलते हैं। इन्हें काट देने के उपरान्त भी क्षेत्रों में घास-फूस बहुत तेजी से बढ़ जाते हैं। वर्षा की अधिकता के कारण मिट्टी के पोषक तत्व बहकर नीचे की परतों में चले जाते हैं और भूमि अनुपजाऊ हो जाती है। इन क्षेत्रों में पहली फसल अच्छी तरह प्राप्त करली जाती है किन्तु दो-तीन वर्षों में भूमि की उपजाऊ शक्ति का ह्रास हो जाने पर कृषि उपज निरन्तर कम होती जाती है। फलतः यहाँ के निवासी अपनी कृषि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित करते रहते हैं। इस प्रकार की कृषि को 'स्थानान्तरित कृषि' कहते हैं।

इस प्रकार की कृषि दक्षिणी अमेरिका में अमेजन घाटी में तथा मध्य अमेरिका में की जाती है। एशिया में भारत, थाईलैण्ड, कम्बोडिया के भागों में ऐसी कृषि की जाती है। इस प्रकार की कृषि को विभिन्न स्थानीय नामों से पुकारा जाता है। भारत में झूम, एयरका, पैंडा, जारा आदि, श्रीलंका में चेना, म्यानमार (बर्मा) में तुग्या, जावा और मलयेशिया में लदांग, कांगो-अफ्रीका में फैंग और अमेरिका में मिलपा कहते हैं।

कृषि करने की विधियाँ—इस प्रकार की कृषि किन क्षेत्रों में प्रारम्भ की जाय इसका निर्णय कबीलें के बुजुर्ग और अनुभवी लोग करते हैं। पहले वनों में एक ऐसे निश्चित क्षेत्र को चुन लिया जाता है जिसके वृक्ष सरलता से काटे जा सकें। जहाँ वृक्ष अधिक लम्बे होते हैं वह भूमि सामान्यतः अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक उपजाऊ होती है। भूमि का चुनाव हो जाने के बाद उस क्षेत्र के वृक्षों को जला दिया जाता है जिससे राख के माध्यम से मिट्टी को पर्याप्त मात्रा में पोटाशप्राप्त हो जाता है। इस प्रकार के क्षेत्र सामान्यतः 1 से 5 एकड़ तक के होते हैं। इन भागों पर टारो, रतालू, ज्वार, बाजरा, केले, ताड़, कोको आदि की फसल पैदा की जाती है। जब उस भू-भाग की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है तो उस भूमि क्षेत्र को छोड़कर अन्य भू-भाग की खोज की जाती है और वहाँ फिर उसी प्रकार वृक्षों को जलाकर कृषि के लिए भूमि तैयार की जाती है। इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान पर कृषि का स्थानान्तरण होता रहता है।

स्थानान्तरण कृषि की विशेषताएँ

स्थानान्तरण कृषि की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं—

(1) इस प्रकार की कृषि में फलों के उत्पादन को अधिक महत्व दिया जाता है। यद्यपि फसलों में मक्का, ज्वार, बाजरा तथा धान की कृषि भी प्रमुखता से की जाती है।

(2) यह कृषि यान्त्रिक साधनों द्वारा न होकर खुर्पी या नुकीली लकड़ी की सहायता से की जाती है।

(3) इस प्रकार के कृषि प्रदेशों में कृषकों का जीवन-स्तर बहुत निम्न कोटि का होता है।

(4) इस प्रकार के कृषि प्रदेशों में सम्पूर्ण वर्ष अधिक वर्षा और तापमान रहने के कारण प्राकृतिक वनस्पति बहुत तेजी से बढ़ती है। प्रकृति की यह क्रिया सदैव चलती रहती है। इस प्रकार की कृषि प्रायः आदिवासी क्षेत्रों में पायी जाती है।

4. प्रारम्भिक स्थायी कृषि प्रदेश (Rudimental Sedentary Agricultural Region)

इस प्रकार की कृषि मुख्य रूप से उष्ण, आर्द्र निम्न क्षेत्रों में, निम्न भूमि प्रदेशों में, अर्द्ध उष्ण और शीतोष्ण कटिबन्धीय पठारों पर तथा उष्ण कटिबन्धीय पहाड़ी भागों में की जाती है। इस प्रकार की कृषि की विशेषताएँ

Scanned with CamScanner

स्थानान्तरण कृषि के समान ही होती हैं। परन्तु अन्तर केवल इतना है कि इसके अन्तर्गत कृषि में स्थान परिवर्तन नहीं होता है। यह कृषि पद्धति स्थानान्तरण कृषि से ही विकसित हुई है। जहाँ पर प्राकृतिक दशाएँ कृषि के लिए अनुकूल दृष्टिगत होती हैं, स्थानान्तरण कृषि स्थायी कृषि में परिवर्तित हो जाती है।

आर्द्र उष्ण कटिबन्धीय भागों में जनसंख्या की अधिकता के कारण कृषि में स्थायित्व का तत्व समाहित हो जाता है। इस प्रकार की कृषि गहन कृषि के लिए उपयुक्त है।

5. चावल प्रधान गहन कृषि निर्वाहन कृषि प्रदेश (Intensive Subsistance Rice Producing Regions)

इस प्रकार के कृषि प्रदेशों में चावल की कृषि प्रधान रूप से स्थानीय उपभोग के लिए की जाती है। **चावल प्रधान गहन कृषि प्रदेश प्राचीन दुनिया के उन उष्ण आर्द्र प्रदेशों में स्थित हैं जहाँ विश्व की लगभग 1/3 जनसंख्या निवास करती है।** प्राकृतिक दशायें भी इस कृषि के लिए इन क्षेत्रों में उपयुक्त मिलती हैं। अधिक जनसंख्या को भोजन प्राप्त करने के लिए भूमि पर गहन कृषि की जाती है। एक ही कृषि क्षेत्र पर वर्ष में दो अथवा तीन फसलें प्राप्त की जाती हैं। इस क्षेत्र की भूमि प्राचीन काल से ही कृषि के अन्तर्गत होने के कारण छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित होती है। प्रायः खेत छोटे होते हैं और कृषि प्राचीन पुरानी परम्पराओं के अनुसार की जाती है।

इस प्रकार की कृषि की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं—

(1) अधिक जनसंख्या वाले भागों की कृषि होने के कारण इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत ऐसी उपज पैदा की जाती है जिसमें अधिक-से-अधिक श्रम का उपयोग हो सके और अधिकतम खाद्यान्न पैदा हो सके जिससे खाद्य समस्या का समाधान संम्भव हो सके। इन प्रदेशों में चावल के अतिरिक्त गेहूँ, गन्ना, जूट आदि उपज पैदा की जाती हैं।

(2) इन कृषि प्रदेशों में कृषि मुख्यतः पशुओं की सहायता से की जाती है।

(3) इन प्रदेशों में मशीनों का उपयोग बहुत कम किया जाता है। कृषि प्राचीन काल से चली आ रही रूढ़िवादी प्रतिक्रिया से ही की जाती है।

(4) खेत बहुत छोटे-छोटे और बिखरे हुए होते हैं, भूमि का बहुत बड़ा भाग मेंड़ और बाड़ बनाने में छूट जाता है जिससे श्रम भी व्यर्थ जाता है और धन भी नष्ट होता है।

(5) इन प्रदेशों से वे ही उपजें प्राप्त की जाती हैं जो अपने उपयोग की होती हैं । छोटे खेत होने तथा रूढ़िवादी तरीकों से खेती होने के कारण इतना अधिक उत्पादन नहीं हो पाता कि उसका निर्यात किया जा सके। इन प्रदेशों की मुख्य उपज चावल है। इन क्षेत्रों में चावल की तीन फसलें तक बोई जाती हैं।

6. चावल विहीन गहरी निर्वाहन कृषि प्रदेश (Intensive Subsistance Non-Rice Producing Regions)

यद्यपि इस प्रकार के कृषि प्रदेशों में प्राकृतिक वातावरण लगभग इससे पूर्व के कृषि प्रदेश के समान ही रहता है परन्तु इसी क्षेत्र में चावल महत्वपूर्ण कृषि उपज नहीं रहती है। इस प्रकार की कृषि को **शुष्क कृषि** (Dry Farming) कहते हैं। इस प्रकार की कृषि में विभिन्न प्रकार की फसलें पैदा की जाती हैं और वर्षा पर ही उपज निर्भर रहती है। इसमें किसी एक फसल का महत्व नहीं रहता है।

7. व्यापारिक बागाती कृषि प्रदेश (Commercial Plantation Agricultural Region)

संसार के विभिन्न भागों में व्यापारिक दृष्टि से फसलें पैदा की जाती हैं, जैसे उष्ण कटिबन्ध में केला, गन्ना, चाय, कहवा, रबड़ आदि व्यापारिक बागाती कृषि प्रायः उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ सम्पूर्ण वर्ष 17·7°C से ऊँचे तापमान रहते हैं। उष्ण कटिबन्धीय बागाती कृषि निम्न तीन मुख्य प्रदेशों में की जाती है—

1. लैटिन अमेरिका के देशों में,
2. अफ्रीका के पश्चिमी तट के देशों में, तथा
3. दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में।

(1) **लैटिन अमेरिका के देशों में**—लैटिन अमेरिकी देशों में ब्राजील, क्यूबा, मैक्सिको, गायना आदि देश आते हैं। इन देशों में विभिन्न प्रकार की उपज जैसे केला, कहवा, गन्ना आदि पैदा किये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(2) **अफ्रीका के पश्चिमी तट के देश**—अफ्रीका का पश्चिमी तट एवं मालागासी के क्षेत्रों में नारियल, कोको, केला, अनन्नास आदि पैदा किये जाते हैं।

(3) **दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देश**—भारत, मलयेशिया, श्रीलंका, इण्डोनेशिया आदि देश दक्षिणी-पूर्वी एशिया के अन्तर्गत आते हैं। इन देशों में रबड़, चाय, गन्ना आदि की उपज प्राप्त की जाती है।

व्यापारिक बागाती कृषि की विशेषताएँ

व्यापारिक बागाती कृषि की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं :

(1) यह विशाल पैमाने की कृषि का एक अंग है। एक स्थान पर एक ही व्यापारिक फसल बिक्री के लिए पैदा की जाती है।

कृषि का यह विशिष्टीकरण उष्ण कटिबन्धीय उत्पादनों का ही होता है जिनके लिये ऊँचे तापमान एवं अधिक वर्षा इन प्रदेशों में प्राप्त होती है। प्राकृतिक वातावरण और इस प्रकार की कृषि में घनिष्ट सम्बन्ध मिलता है क्योंकि जिन फसलों को प्रायः सम्पूर्ण वर्ष ही शीतल जलवायु की आवश्यकता होती है वे ऊँचे ढालों पर ही पैदा की जाती हैं।

(2) बागाती कृषि का रूप अत्यन्त व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक होता है। अतएव कृषि कार्यों के लिए मशीनों, उपकरणों और खाद आदि के लिए पर्याप्त मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है। यह पूँजी यूरोप और अमेरिका के विकसित देशों से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त प्रशासनिक एवं तकनीकी ज्ञान, रासायनिक खाद, रेल व्यवस्था, श्रमिकों के लिए रोग निवारक औषधियाँ, वस्त्र आदि सभी इन्हीं देशों से आती हैं। अतः अधिकांश में बागाती कृषि का विस्तार यूरोपीय अथवा अमेरिकी पूँजीपतियों द्वारा किया गया है।

(3) बागाती कृषि विश्व के उन बिखरे हुए भागों में ही की जाती है जिनके चारों ओर जीविकोपार्जन के अन्य उद्यम स्थित रहते हैं। फलतः इस कृषि से खाद्यान्न की प्राप्ति पूरी नहीं हो पाती अतः खाद्यान्नों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है।

(4) इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत शीतोष्ण कटिबन्धीय देशों के लिए विशिष्ट वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। इसके अन्तर्गत सबसे अधिक लाभदायक फसलें गन्ना, कहवा, चाय और रबड़ हैं परन्तु अन्य फसलों की भी माँग अधिक होती है जैसे केला, नारियल, कोको, ताड़, सिंकोना, आदि।

विश्व में बागाती कृषि के विशिष्ट क्षेत्रों में मलयेशिया के रबड़ बागात, इण्डोनेशिया के रबड़ और गन्ना बागात, श्रीलंका और भारत के चाय बागात, मालागासी के चाय, कॉफी और गन्ना बागात, लैटिन अमेरिका के केला बागात और क्यूबा का गन्ना क्षेत्र बागाती कृषि के उदाहरण हैं।

8. भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेश (Mediterranean Agriculture Regions)

भूमध्यसागरीय जलवायु एक विशिष्ट प्रकार की जलवायु होती है जिसमें शीतकाल में वर्षा और ग्रीष्म ऋतु शुष्क रहती है। यह जलवायु कृषि के उत्पादन में भी अपना विशिष्ट प्रभाव रखती है। भूमध्यसागरीय प्रदेशों में निर्वाहन और व्यापारिक दोनों ही प्रकार की कृषि की पद्धति विकसित की गयी है।

भूमध्यसागरीय कृषि उत्पादन की विशेषताएँ

भूमध्यसागरीय कृषि की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं—

(1) कृषि के तरीकों, नगरों की निकटता, वर्षा की मात्रा, कृषकों के तकनीकी ज्ञान, शासकीय संरक्षण के अनुसार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कृषि के ढंग और उत्पादन भिन्न-भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तरी अफ्रीका में मोरक्को, अल्जीरिया और ट्यूनीशिया में वर्षा की कमी के कारण जौ, अंगूर और जैतून की कृषि की जाती है। यूनान में अंगूर, स्पेन में अंगूर और नारंगियाँ, कैलीफोर्निया में नारंगियाँ, सब्जी, इटली में गेहूँ, मध्य चिली में फल आदि विभिन्न प्रकार की फसलें प्राप्त की जाती हैं।

(2) भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेशों में कृषि के निम्न स्वरूप पाये जाते हैं:

(i) निर्वाहक प्रकार की कृषि, तथा

(ii) व्यापारिक कृषि ।

Scanned with CamScanner

(i) **निर्वाहक प्रकार की कृषि**—मध्य स्पेन, दक्षिणी इटली, ग्रीस और तुर्की में निर्वाहक किस्म की कृषि अधिक की जाती है। इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत गेहूँ, अंजीर, जैतून, जौ आदि की फसलें पैदा की जाती हैं।

(ii) **व्यापारिक कृषि**—उत्तरी इटली, दक्षिणी फ्रांस, स्पेन के तटीय भाग, कैलीफोर्निया आदि क्षेत्रों में भौगोलिक कृषि की जाती है। इस कृषि के अन्तर्गत रसदार फल, अंगूर, सेव, सब्जियाँ आदि विशेष रूप से पैदा की जाती हैं। इन प्रदेशों में कृषि मशीनों द्वारा की जाती है। यहाँ फल आदि निर्यात के लिए पैदा किये जाते हैं।

भूमध्यसागरीय प्रदेशों में मुख्यतः निम्न तीन प्रकार की फसलें पैदा की जाती हैं—

(1) **शीतकालीन कृषि उपज**—भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेशों में यह वर्षा की ऋतु होती है। शरद ऋतु के प्रारम्भ होते ही खाद्यान्न (गेहूँ और जौ), साग-सब्जियाँ आदि बोई जाती हैं जो बसन्त ऋतु तक पककर तैयार हो जाती हैं। शीत ऋतु में आर्द्रता और नम जलवायु में यह फसलें शीघ्र उग आती हैं। शीतकालीन उपज की सब्जियों में आलू, टमाटर, सेम, गाजर, मूली, चूकन्दर, गोभी आदि मुख्य हैं। इन सब्जियों का व्यापारिक महत्व बहुत अधिक है।

(2) **ग्रीष्मकालीन कृषि उपज**—भूमध्यसागरीय प्रदेशों में ग्रीष्म ऋतु शुष्क होती है परन्तु जिन क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होती है, वहाँ व्यापारिक कृषि की फसलें प्राप्त की जाती हैं जिनमें फल, सब्जियाँ, चारे के लिए फसल, अंगूर की कृषि बहुत की जाती है, रसदार फल (सन्तरे), सेव, नाशपाती आदि पैदा किये जाते हैं। ग्रीष्मकालीन कृषि के अन्तर्गत कपास भी पैदा की जाती है।

(3) **बिना सिंचाई की कृषि उपज**—जैतून, अंजीर बिना सिंचाई की कृषि फसलें हैं। यह भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में वृक्ष की उपज मानी जाती हैं। ये फसलें बिना सिंचाई के ही प्राप्त की जाती हैं। विश्व के कुल उत्पादन का 90 प्रतिशत जैतून का उत्पादन भूमध्यसागरीय प्रदेशों में ही किया जाता है। इसी प्रकार अंजीर की झाड़ी बिना सिंचाई के वर्ष में दो बार फल देती है।

भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेशों में पशुओं का महत्व भी एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में परिवर्तित हुआ मिलता है। कुछ भागों में पशुओं की संख्या बहुत अधिक है तो कुछ भागों में बहुत कम है। जिन प्रदेशों में वर्षा की अधिकता एवं कम ताप के कारण घास उग आती है उन भागों में दूध वाले पशु पाले जाते हैं परन्तु जहाँ घास कम उगती है वहाँ भेड़-बकरियाँ पाली जाती हैं।

भौतिक वातावरण के समान ही मानव क्रियाएँ भी इस कृषि को प्रभावित करती हैं। मानव क्रियाओं के कारण फसलों और पशुओं में भिन्नता हो जाती है। कृषि का व्यापारिक अथवा निर्वाहन होना आदि मानव प्रभाव के कारण भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न है। कैलीफोर्निया में फलों का उत्पादन व्यापारिक महत्व के कारण अधिक विकसित हुआ है जबकि यूरोपीय देशों में फलों का उत्पादन अभी तक उन्हीं परम्पराओं द्वारा किया जा रहा है।

9. व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि प्रदेश (Commercial Grainfarming Agriculture Regions)

व्यापारिक अन्न उत्पादन मध्यवर्ती अक्षांशों में 30° से 55° उत्तर और दक्षिण में किया जाता है। विश्व के प्रमुख व्यापारिक अन्न उत्पादक प्रदेश निम्नांकित हैं—

(1) यूरेशिया के 3,200 किलोमीटर लम्बे क्षेत्र में दक्षिण रूस में कीव नगर से लगाकर साइबेरिया में ओमस्क तक का विस्तृत क्षेत्र, काकेशस और बोल्गा नदी के बीच में 1,120 किलोमीटर चौड़े क्षेत्र में सबसे विशाल अन्न उत्पादक क्षेत्र है।

(2) उत्तरी अमेरिका में कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में इसका विस्तार पाया जाता है। कनाडा में अलबर्टा, मेनीटोबा और ससकेच्वान प्रान्त तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्तरी तथा दक्षिणी डकोटा, कोलम्बिया बेसिन, शीतकालीन गेहूं मेखला, शीतकालीन कोमल गेहूँ और मक्का मेखला मुख्य व्यापारिक अन्न उत्पादक क्षेत्र हैं।

(3) दक्षिणी अमेरिका में अर्जेण्टाइना और आस्ट्रेलिया में भी इस प्रकार की कृषि के विशाल क्षेत्र मिलते हैं।

Scanned with CamScanner

दूसरे शब्दों में, व्यापारिक अन्न उत्पादन मुख्यतः मध्य अक्षांशीय घास के मैदानों में किया जाता है। उत्तरी अमेरिका में प्रेयरी, रूस के स्टैपी प्रदेश, अर्जेण्टाइना में पम्पास और आस्ट्रेलिया में डाउन्स में इस प्रकार की कृषि के क्षेत्र मिलते हैं।

व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि की विशेषताएँ

व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं :

(1) इसके अन्तर्गत एक ही कृषि उपज (खाद्यान्न) प्राप्त की जाती है, जिनमें गेहूं तथा मक्का मुख्य हैं।

(2) सम्पूर्ण कृषि कार्य मशीनों द्वारा पूर्ण किया जाता है।

(3) स्थानीय श्रमिकों की सहायता से ही कृषि की जाती है।

(4) व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि में खेतों का आकार बहुत विशाल होता है इससे मशीनों का उपयोग बहुत सुगमता से किया जा सकता है।

(5) इस प्रकार की कृषि में पशुओं का महत्व बहुत कम होता है।

(6) इन कृषि प्रदेशों में जनसंख्या का भार बहुत कम होता है अतः निर्यात के लिए पर्याप्त अन्न बच जाता है।

इस प्रकार की कृषि औद्योगिक युग की देन है। यह कृषि प्रदेश प्रायः उन अर्द्ध-शुष्क प्रदेशों में मिलते हैं जहाँ कुछ समय पूर्व तक आदिवासी या घुमक्कड़ चरवाहे पशु चराने जाते रहे हैं। ये क्षेत्र आर्द्र और शुष्क जलवायु के मध्य में स्थित हैं और समुद्री भागों से बहुत दूर पड़ते हैं।

गेहूँ इन प्रदेशों की मुख्य उपज है। बसन्त ऋतु का गेहूँ कनाडा, उत्तरी संयुक्त राज्य अमेरिका और साइबेरिया में पैदा किया जाता है जबकि शेष भागों में आस्ट्रेलिया, अर्जेण्टाइना, मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका और यूक्रेन गणराज्य में शीतकालीन गेहूँ की कृषि की जाती है।

10. व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश (Commercial Livestock and Crop Farming Regions)

इस प्रकार की कृषि को मिश्रित कृषि भी कहते हैं। फसल के उत्पादन और पशुओं के पालन में कृषकों का व्यापारिक उद्देश्य निहित होता है। यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका इस प्रकार की कृषि के मुख्य क्षेत्र हैं। मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों ओहियो, इण्डियाना, इलनाइस, आयोवा, नेब्रास्का, वर्जीनिया तथा दक्षिणी राज्यों में जार्जिया, ओकलाहोमा तथा टैक्सास राज्यों में इस प्रकार की कृषि की जाती है। इस प्रकार की कृषि में फसल को भी उतना ही महत्व दिया जाता है जितना कि पशु पालन को दिया जाता है।

व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश की विशेषताएँ

व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं—

(1) इस कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत फसल उत्पादन तथा पशुपालन दोनों ही कार्य साथ-साथ किये जाते हैं। यहाँ कृषि मुख्यतः खाद्यान्न, चारे और खाद्यान्न व्यापार के लिए की जाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में मक्का की उपज पशुओं को खिलाने के लिए की जाती है।

(2) इस क्षेत्र के कृषकों की आय का मुख्य साधन पशुपालन ही होता है। पशुओं में सूअर, चौपाये, मुर्गियाँ आदि मुख्य होते हैं।

(3) इस प्रकार की कृषि में श्रम और पूँजी की अधिक आवश्यकता होती है।

(4) कृषि और पशुपालन में मशीनों का अधिकतम उपयोग किया जाता है।

11. निर्वाहक उपज एवं पशुपालन कृषि प्रदेश (Subsistence Crop and Stock Farming Regions)

इस प्रकार की कृषि के क्षेत्र रूस में नये विकसित कृषि क्षेत्रों में तथा अविकसित देशों में मिलते हैं। मैक्सिको तथा अनातोलिया के पठार इस प्रकार की कृषि के मुख्य उदाहरण हैं। इस प्रकार की कृषि में पशुपालन के साथ प्राचीन दुनिया के देशों में मोटे अनाज (ज्वार-बाजरा) तथा नई दुनिया के देशों में मक्का की कृषि की जाती है।

Scanned with CamScanner

12. व्यापारिक दुग्ध एवं पशुपालन कृषि प्रदेश (Commercial Dairy Farming Regions)

इस प्रकार के कृषि प्रदेशों का मुख्य उद्देश्य दुग्ध और डेयरी पशुओं के लिए कृषि करना होता है। इस प्रकार की कृषि के निम्न तीन मुख्य क्षेत्र हैं—

(1) पश्चिमी यूरोप के देश डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन आदि हैं।

(2) संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा का उत्तर-पूर्वी भाग।

(3) आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड।

(1) **पश्चिमी यूरोप के देश**—पश्चिमी यूरोप अनेक देशों में औद्योगिक विकास अधिक हुआ है, अतः वहाँ कृषि योग्य भूमि की कमी है, फलतः इन देशों ने डेयरी व्यवसाय का विकास किया है। इन देशों में अन्य देशों की तुलना में दुग्ध पशुओं की संख्या प्रति वर्ग किलोमीटर अधिक पायी जाती है। डेनमार्क विश्व में सर्वाधिक दूध और उससे बने पदार्थ का निर्यात करने वाला देश है।

पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों में पशुओं की संख्या, 1993[1]

देश	चौपायों की संख्या
1. डेनमार्क	1,37,63,000
2. फ्रांस	4,69,03,000
3. जर्मनी	4,27,85,000
4. बेल्जियम	1,01,16,940

ग्रेट ब्रिटेन में पशुओं की संख्या (हजार में)[2]

पशु	वर्ष		
	1990	1991	1992
पशु	12,057	11,866	11,778
(दूध देने वाले)	2,847	2,770	2,682
भेड़ें	47,789	43,621	43,973
सुअर	7,447	7,596	7,608
पाल्ट्री	1,24,384	1,27,228	1,23,992

ग्रेट ब्रिटेन में वर्ष 1992 में 8,68,000 टन दूध से निर्मित विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन हुआ।

डेनमार्क में वर्ष 1993 में दूध देने वाले पशुओं से निम्नानुसार दूध व दूध से निर्मित पदार्थ प्राप्त हुए (हजार टन) :

दूध 4,660, मक्खन 59, चीज 3231

फ्रांस में वर्ष 1992 में दूध देने वाले पशुओं से 24,334,000 मिलियन लिटर दूध की प्राप्ति हुई।

जर्मनी में वर्ष 1993 में दूध देने वाले पशुओं से 28,098,000 मिलियन लिटर दूध की प्राप्ति हुई।

(2-i) **संयुक्त राज्य अमेरिका**—न्यूयार्क से विस्कान्सिन राज्य तक की कृषि मेखला डेयरी उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की जलवायु पशुपालन के लिए अनुकूल है, इसलिए चारा सरलता से उपलब्ध हो जाता है।

यहाँ के कृषक फसलों के फल, सब्जियाँ एवं चुकन्दर की कृषि करते हैं। उत्तरी-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य वाशिंगटन और ओरोगन राज्यों में प्यूगट साउण्ड, स्नेक आदि नदियों की घाटी में भी पशुपालन मुख्य व्यवसाय है।

1 *The Statesman's Year Book*, 1995-96.
2 *Ibid.*

Scanned with CamScanner

(ii) **कनाडा**—कनाडा के पूर्वी प्रान्तों में दूध के लिए पशु पाले जाते हैं। इस क्षेत्र की जलवायु सामुद्रिक है। इस कारण यहाँ आर्द्रता के कारण घास के लिए अनुकूल दशाएँ पायी जाती हैं इसीलिए इस क्षेत्र में डेयरी उद्योग का भी विकास हुआ है।

(3) **दक्षिणी गोलार्द्ध**—(i) आस्ट्रेलिया में पशुपालन महत्वपूर्ण व्यवसाय है। आस्ट्रेलिया में वर्षा अनिश्चित होती है इस कारण केवल दक्षिण-पूर्वी और उत्तरी-पूर्वी भाग में पशुओं की संख्या अधिक पायी जाती है।

(ii) न्यूजीलेण्ड में इस प्रकार की कृषि बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इस देश की जलवायु इस प्रकार की कृषि के लिए अधिक अनुकूल पायी जाती है। न्यूजीलेण्ड में पशुओं को सम्पूर्ण वर्ष तक चरागाहों पर चराया जाता है। उत्तरी द्वीप का तारानको, आकलैण्ड तथा दक्षिणी द्वीप का केण्टबरी का मैदान प्रमुख डेयरी उद्योग के क्षेत्र हैं। न्यूजीलैण्ड के कुल निर्यात का 30 प्रतिशत भाग डेयरी उद्योग की वस्तुओं का ही होता है।

न्यूजीलैण्ड में वर्ष 1992 में पशुओं की संख्या निम्नानुसार थी—(हजार)

दूध देने वाले पशु 3,468, माँस वाले पशु 4,676, भेड़ें 52,568, हरिण 1,135, बकरे-बकरियाँ 533, सुअर 411। मार्च 1993 तक न्यूजीलैण्ड में दूध देने वाले पशुओं से 8,050 मिलियन लिटर दूध की प्राप्ति हुई।

आस्ट्रेलिया में 31 मार्च, 1993 को पशुओं की संख्या निम्नानुसार थी—(हजार)

पशु 24,062, भेड़ें 1,38,102, सुअर 2,646 एवं पॉल्ट्री 63,722 । 30 जून, 1994 तक दूध देने वाले पशुओं से आस्ट्रेलिया को 8,076 मिलियन लिटर दूध की प्राप्ति हुई।

13. बागवानी कृषि प्रदेश

इस प्रकार की कृषि प्रायः बड़े नगरों के निकट विकसित हुई है। इस प्रकार की कृषि में फसल और भूमि उपयोग में भिन्नता पायी जाती है। यह विशेषकर यूरोप, भूमध्यसागरीय प्रदेशों तथा उत्तरी अमेरिका के देशों में अधिक विकसित हुई है। इस प्रकार की कृषि में साग-सब्जियाँ तथा फूल आदि की कृषि की जाती है जिनकी स्थानीय माँग अधिक होती है। स्थानीय माँग के आधार पर ही इस कृषि में उपज में परिवर्तन पाया जाता है।

Scanned with CamScanner